The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

हिंदी एवं नेपाली कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री अस्मिता का प्रश्न
(शिवमूर्ति तथा सानु लामा के विशेष संदर्भ में)

नुनिता राई - शोधार्थी
डॉ0 आशीष पाण्डेय - शोध निर्देशक
हिंदी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17130295

ARTICLE DETAILS

Research Paper
Accepted: 26-08-2025
Published: 10-09-2025

Keywords:
स्त्री अस्मिता, वेदना, पीड़ा, स्त्री जीवन, प्रेम, लोक कल्याण, सिक्किम, ग्रामीण परिस्थितियां, उत्तर भारत, पंचायत राज, विडम्बना, सामाजिक मर्यादा, संघर्ष, संवेदना ।

ABSTRACT

स्त्री अस्मिता एवं उसके अस्तित्व को लेकर लम्बे समय से विमर्श चलता आ रहा है। सामंती व्यवस्था में स्त्री को भोग की वस्तु समझा गया। उसे क्रय-विक्रय की वस्तु समझा गया। उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व ना के बराबर मात्र माना गया। किन्तु समय के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक आचार-विचार में परिवर्तन आया। जिसकी परिणति स्वरुप महिला सशक्तिकरण, नारी उत्थान तथा उसके अधिकारों पर एक साहसिक बहस तक छिड़ी। किन्तु यह सभी प्रयास केवल नगरों-महानगरों तक सीमित दिखाई पड़ते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शोषित तथा अपने अधिकारों से वंचित नज़र आती है। यद्यपि महिलाओं के लिए प्रशासनिक स्तर पर अनेक प्रयास अवश्य किए गए किन्तु वे प्रयास ग्रामीण क्षेत्रों में धरातल पर कम ही उतर पाए। इस परिप्रेक्ष्य में शिवमूर्ति हिन्दी तथा सानु लामा नेपाली कहानियों के माध्यम से स्त्री अस्मिता को लेकर अपना मंतव्य प्रकट करते हैं। जिसके अंतर्गत उत्तर भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियाँ नेपाली समाज की स्त्रियों की तुलना में अधिक दुर्बल तथा शोषित दिखाई पड़ती हैं। दोनों ही स्थानों पर स्त्रियों की अपनी-अपनी समस्याएं तथा अस्मिता को लेकर प्रश्न दर्शनीय हैं किन्तु शिवमूर्ति की कहानियों में सानु लामा की नेपाली स्त्री पात्रों की तुलना में ग्रामीण स्त्रियों की सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक स्थिति अधिक विराट एवं गंभीर नज़र आती है।

सानु लामा की कहानियों में भावोद्गार, मानवीय भावबोध, संबंधों का विछोह तथा संवेदनाओं की टूटन आदि का भावपरक-अनुभूतिजन्य वर्णन मिलता है। जबकि शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री शोषण की करुण पुकार उसका विरोध-प्रतिकार का स्वर तथा अधिकारों को लेकर उसका संघर्ष परिलक्षित है। अतः शिवमूर्ति तथा सानु लामा दोनों ही कहानीकार हिन्दी व नेपाली कहानी जगत में स्त्री अस्मिता के संघर्ष को प्रकट करने वाले सशक्त हस्ताक्षर दर्शनीय हैं।

शोध आलेख-

स्त्री अस्मिता का प्रश्न सदैव से एक ज्वलंत मुद्दा रहा है। स्त्री को कोमल, करुणामयी तथा देवी माना गया है। किंतु स्त्री के प्रति शोषण-अन्याय के प्रसंग भी उद्घाटित होते रहे हैं। स्त्री जीवन को लेकर अनेक लेखकों ने अपनी लेखनी चलाई है। जिनमें समकालीन हिंदी लेखकों के साथ-साथ नेपाली लेखकों की लम्बी परंपरा दर्शनीय है। उपन्यास-कहानी की गद्य विधा में स्त्री अस्मिता को लेकर अनेक कृतियां दृष्टिगोचर हैं। किंतु हिंदी तथा नेपाली भाषा में कहानी लेखन के परिप्रेक्ष्य में स्त्री जीवन आधृत चिंतन मुख्य रूपेण दर्शनीय है। इस परिदृश्य में हिंदी के शिवमूर्ति तथा नेपाली के सानु लामा चर्चित कहानीकार दर्शनीय हैं। "शिवमूर्ति ने गांव को उसकी समग्रता में उकेरना चाहा है। गांव में अब भी इस तरह की स्त्रियाँ मिल जाएंगी जो अपने आप में सर्वस्व समर्पण की प्रतिमूर्ति हैं। 'सिरी उपमा जोग' इसी तरह की एक स्त्री संघर्ष और बलिदान गाथा है।"[1] अतः शिवमूर्ति ने जिन कहानियों का लेखन कार्य किया है। उनमें ग्रामीण जीवन, परिवेश तथा समाज-संस्कृति परिलक्षित है। ग्रामीण जीवन भारतीय समाज का आधार है। ग्राम ही भारतीय समाज की आत्मा या रीढ़ मानी जाती है। नगरों-महानगरों की संकल्पना ग्रामों के बहुत बाद की प्रस्फुटित हुई है। आज भी भारतीय जनमानस की आधी से अधिक आबादी ग्रामों में निवास करती है। ग्रामीण परिवेश में विद्यमान सामाजिक विभिन्न वर्गों का उल्लेख शिवमूर्ति की कहानियों में मिलता है। कृषक वर्ग, दलित वर्ग, सामंत वर्ग, स्त्री वर्ग तथा श्रमिक वर्गों का प्रधान रूप से वर्णन शिवमूर्ति की कहानियों में मिलता है। इनमें स्त्री वर्ग की समस्याओं का उल्लेख करते हुए शिवमूर्ति प्रासंगिक दृष्टिगोचर हैं। इनकी कहानियों में 'सिरी उपमा जोग' इस तथ्य की भली-भांति पुष्टि भी करती है। जिसमें एक स्त्री, लालू पात्र की माँ का संघर्षमयी जीवन निहित है। इस परिदृश्य में नेपाली भाषा के प्रमुख हस्ताक्षर कहानीकार सानु लामा की कहानियों में भी स्त्री अस्मिता का दर्शन मिलता है। "सानु लामा सबै थरी आख्यानकृतिहरूको एउटा स्थायीभाव हो नारी-शक्तिको उद्गान आफ्नो प्रथम प्रकाशित कथा 'स्वास्नीमान्छे' मा उनले नारी शक्तिको प्रखरता जुन स्पष्टता र प्रभावात्मकतासंग अंकित गरेका छन्, त्यही स्पष्टता र प्रभावात्मकतासित यी लघु कथामा पनि नारीपक्षीय दृष्टिकोण र तर्कको अभिव्यक्ति पाइन्छ।"[2] अर्थात् सानु लामा की सभी कहानियों में नारी शक्ति का स्थायी भाव का उद्गार है। इनकी प्रथम प्रकाशित कहानी 'आफ्नो' तथा 'स्वास्नीमान्छे' में नारी शक्ति को जिस प्रभावात्मकता और स्पष्टता के साथ अंकित किया गया है, उसी स्पष्टता और प्रभावात्मकता के साथ इस कहानी में यह नारी पक्षीय दृष्टिकोण और तर्क की अभिव्यक्ति मिलती है।

सानु लामा के समान ही शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री जीवन का संघर्ष दिखाई पड़ता है। लेकिन शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री जीवन की समस्याएं कहीं अधिक बड़ी एवं विराट दिखाई पड़ती है। केशर कस्तूरी संग्रह में कसाईबाड़ा कहानी को देखें तो स्त्री जीवन की विकटता तथा विषमता के अति निकृष्ट रूप नजर आते हैं। अपने आत्म समान, आबरू तथा अस्मिता की रक्षा करने के स्वर में सुगनी कहती है। "काकी, अपना परधान कसाई है। इसने पैसा लेकर हम सबको बेच दिया है। शादी की बात धोखा थी। हम सबको पेशा करना पड़ता है, रूपमती को भी। अमीरों के घर सोने भेजा जाता है। आज मैं किसी तरह से निकल भागी। पीछे बदमाश लग गए थे।"[3] अतः स्त्रियों का व्यापार करना, उनके सम्मान की बोली लगाना गाँव के परधान का धंधा है। वह अपने स्वार्थ के लिए गाँव की स्त्रियों को भ्रमित करता है। उनका शोषण रसूखदार लोगों से कराता है। इन्हीं कारणों से इस गाँव को कसाईबाड़ा तथा परधान जैसे लोगों को कसाई तक संबोधित किया गया है। इसी प्रकार तिरिया चरित्तर कहानी में शिवमूर्ति ने विमली पात्र के द्वारा स्त्री जीवन की पीड़ा का ज्वलंत दस्तावेज प्रकट किया है। विमली एक स्त्री होकर भी घर की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती है। वह अपनी अस्मिता के लिए निरंतर संघर्षरत है। वह एक पुत्र के समान कमाई करती है। अपने माँ-बाप का सहारा बनती है। उसके माँ-बाप भी उसकी दीन-हीन दशा से दुःखी हैं। वे उसके साथ खड़े रहते हैं। विमली ने अपने माता-पिता को कभी पुत्र की कमी अहसाह नहीं होने दिया। शिवमूर्ति तिरिया चरित्तर कहानी में लिखते हैं – "दरअसल माँ-बाप के लिए लड़का बनकर रहती है विमली! क्या-क्या नहीं सहा-सुना उसके माँ-बाप ने उसके लिए! वह नहीं चाहती कि उसके माँ-बाप लड़के के अभाव को लेकर दुःखी हों। किस लड़के से कम है वह? 15-16 रुपए रोज कमाती है, बाप को जाँगर पेरनेवाला काम क्यों करने दें?"[4] फलतः यह समझा जा सकता है कि शिवमूर्ति ने स्त्री जीवन के विविध आयामों को अपनी अलग-अलग कहानियों में प्रकट किया है। कहीं वह स्त्री समाज से शोषित-प्रताड़ित नज़र आती है तो कहीं वह घर की जिम्मेदारियों से दबी दिखाई पड़ती हैं। परंतु इन सबके उपरांत भी वह निरंतर अपनी अस्मिता की रक्षा किए जा रही है। वह अपनी अस्मिता को और अधिक सुदृढ़ करते दर्शनीय है। सानु लामा की नेपाली कहानियों में स्त्री जीवन की वेदना, पीड़ा तथा विषमताओं का उल्लेख कोमलकांत व हृदयग्राही संवेदनाओं के रूप में मिलती है। जहाँ सानु लामा सूर्य को तेस्रो किरण कहानी में धनबहादुर तथा राधिका के भावपूर्ण प्रेम के विछोह का दर्शन कराते हुए लिखते हैं, "बग्दै गरेको रेशिलाई हेर्दै भन्यो धनबहादुर, तिमी बुझ्दिनो अहिले, राधिका! तिमी अत्यन्त सोझी र सरल छौ। जुन दिन बुझ्ने छौ त्यस दिन देखि मलाई चिन्ने छौ। जुन मार्ममा म हिंड़न तयार भएँ त्यसको लक्ष्यमा म पुग्नसकूँ त्यस्तों चाहना राख। तिमी मेरो निमित्त सम्झना नबनेर प्रेरणा बनिदेऊ। जीवन लामो छ। जीवनको लक्ष्य हुन्छ, उद्देश्य हुन्छ। त्यही लक्ष्य र उद्देश्य प्राप्तीको निमित्त हामीले जीवन जिउनुपर्छ, सत्कर्म गर्नुपर्छ। यो एउटा यात्रा हो, राधिका।"[5] अर्थात् सानु लामा ने यहाँ पर धनबहादुर द्वारा संन्यास का मार्ग चुनकर राधिका को लोक कल्याण का मार्ग दर्शाया है। तथा प्रेम को प्रेरणा बनाने का उपदेश दिया है। वह बहती रेशी को देखते हुए धनबहादुर ने कहा, तुम नहीं समझोगी अभी राधिका तुम बहुत ही सीधी और सरल हो। जिस दिन समझोगी उसी दिन मुझे पहचानोगी। जिस मार्ग पर मैं चलने के लिए तैयार हूँ। उस लक्ष्य तक मैं पहुँच पाऊँ, वैसी इच्छा रखो तुम भी। तुम मेरे लिए एक याद न बनकर एक प्रेरणा बनो। जीवन लम्बा है। जीवन का लक्ष्य होता है, उद्देश्य होता है। उसी लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए जीना पड़ता है। सतकर्म करना पड़ता है यह एक यात्रा है राधिका। इसी प्रकार सानु लामा ने स्त्री अस्मिता के प्रश्न से जुड़ी कहानी 'बलराम थापाको कथा' में माला के माध्यम से उद्घाटित करते हुए लिखा है – "माला ढोकामा बेसी उभिन सकिनन्। लर्बरिएका पाउले दुर्दै गएर शिरानछेउको टेबलमा ठइयाएर राखेको बलरामको फोटोलाई उठाएर ढुक्-ढुक् गर्दै गरेको आफ्नो छातीमा च्याप्प चेपिन। दुबै आँखाबाट बररर आंसु झरे तर ओंठ हांसिरहेको थियो। बाहिर प्रभातले आफ्नो बाल्यक्रीड़ाले हँसाएछ क्या हो दुवै बढ़ा गललल हाँसे। मालाले आँखाको आँसुपट्टि

ध्यान नै दिइन ती झरिरहे।"[6] यहाँ पर स्त्री हृदय तथा उसके मनोमस्तिष्क कोमलकांत भावों का प्राकट्य दिखाई पड़ता है। जिसमें निहित सार के अनुरूप दृष्टव्य है कि माला दरवाजे पर अधिक खड़ी नहीं रह सकी। लड़खड़ाते हुए पैर से वह दौड़ते हुए गई। वह दौड़ते हुए गई और सिरहाने के बगल में बलराम की फोटो को धड़कते हुए दिल से लगा लिया। दोनों आँखों से आँसू झड़ने लगे फिर भी उसके होठों पर हँसी थी। बाहर छोटा बालक प्रभात ने अपने बाल खेल से दो बूढ़े लोगों को हँसा दिया। माला ने अपने लगातार बहते आँसुओं पर ध्यान नहीं दिया। अतः सानु लामा की कहानियों का मुख्य प्रतिपाद्य सिक्किम की ग्रामीण परिस्थियों का उद्घाटन है। किंतु स्त्री अस्मिता तथा उसके अस्तित्व की व्यापकता का विस्तृत वर्णन इस परिप्रेक्ष्य में दृढ़ता से दर्शनीय है। इस परिदृश्य में शिवमूर्ति ने हिंदी कहानियों में अपने लेखनी चलाकर उत्तर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की स्त्रियों की करुण गाथा को प्रकट किया है। शिवमूर्ति मूलतः ग्रामीण कहानीकार हैं। फलतः ग्रामीण परिवेश की स्त्रियों की पीड़ा का सजीव चित्रण उनकी कहानियों में दिखाई पड़ता है। "दूसरी ओर तिरिया चरित्तर का यथार्थ विडंबनाओं की जकड़न में फंसा दिखाई देता है। आज के ऑनर किलिंग से मैं इस कहानी के कथ्य को जोड़कर देखता हूँ। पंचायत और पंच आज भी वहशियाना सोच रखकर निर्णय लेते हैं। यह भारतीय ग्रामीण जीवन की कटु सच्चाई है, जिसे चाहे जितना नजर अंदाज करें, पर वह अपनी जगह सुदृढ़ रूप में विद्यमान है। पंचायत राज दलितों और स्त्रियों के लिए अभिशाप है। जिसे कोई भी जानना समझना नहीं चाहता है। जिसे जाने बगैर तिरिया चरित्तर के कथ्य और शिल्प को ठीक से नहीं समझा जा सकता है।"[7] अतः यहाँ यह समझा जा सकता है कि शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्रियाँ विडंबनापूर्ण जीवन जीने को मजबूर हैं। अपने जीवन की विकट परिस्थियों में वे संकटों को झेलकर इतनी परिपक्व तथा दृढ़ हो गई हैं कि वे अपनी मजबूत उपस्थिति समाज में दर्ज करा रही हैं। तिरिया चरित्तर कहानी इस परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक दृष्टिगोचर है। संबंधों, सामाजिक मर्यादाओं तथा स्त्री गरिमा को ठेस पहुंचाने वाले कुपात्रों का विमली तथा पतोहू आदि जैसी स्त्रियाँ विरोध करती हैं। तिरिया चरित्तर में ही पतोहू कहती है, "क्योंकि रात मेरी झोपड़ी में दारू पीने वाला, मछली खानेवाला और मेरे साथ मुँह काला करने वाला जानवर यही था। मैं इसे जिन्दा जलाना चाहती थी लेकिन यह बच गया। अब मैं इसका कच्चा माँस खाऊँगी। पतोहू बिसराम की तरफ लपकती है।"[8] अतः यहाँ तिरिया चरित्तर में पतोहू तथा विमली अपने ऊपर हो रहे शोषण का प्रतिकार करती हैं। वे ग्रामीण परिवेश में सामाजिक विडम्बनाओं व विषमताओं के बीच अपनी अस्मिता व अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्षरत हैं। शिवमूर्ति इन यथार्थपरक परिस्थितियों को अपनी कहानियों में प्रस्तुत करने वाले हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर दृष्टिगोचर हैं। इनके समकक्ष सानु लामा नेपाली कथा जगत के प्रख्यात कहानीकार दर्शनीय हैं। इसकी कहानियों में भी ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की विषम स्थितियों का वर्णन मिलता है। यद्यपि यह ध्यातव्य पक्ष है कि सानु लामा की कहानियों की स्त्री पात्रों में शिवमूर्ति की स्त्री पात्रों की तुलना में भावपूर्ण संवेदना अधिक है। किन्तु शिवमूर्ति की स्त्री पात्रों का सामाजिक संघर्ष उनकी भावनाओं, संवेदनाओं तथा कोमलता को आहत करने के लिए जिम्मेदार है। फलतः नेपाली तथा हिन्दी कहानियों में स्त्री के विविध आयामी संघर्ष तथा अपनी अस्मिता को लेकर प्रश्न विद्यमान हैं। जिनका पूर्ण दृढ़ता तथा साहस के साथ शिवमूर्ति तथा सानु लामा आह्वान करते दृष्टिगोचर हैं।

निष्कर्ष-

यह स्पष्ट है कि स्त्री जीवन का संघर्ष तथा अस्मिता का प्रश्न एक विकट सामाजिक समस्या के रूप में दृष्टिगोचर है। इस परिदृश्य में हिंदी तथा नेपाली कहानीकारों ने कथा साहित्य की रचना की है। इनमें शिवमूर्ति तथा सानु लामा मुख्यरूपेण दर्शनीय हैं। इन दोनों ही कथाकारों ने अपने-अपने परिवेश परिस्थितियों के संदर्भ में स्त्री अस्मिता के संघर्ष को दर्शाया है। यद्यपि हिंदी

कहानियों में स्त्री संघर्ष का जो विराट रूप दिखाई पड़ता है उसकी तुलना में नेपाली कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री संघर्ष कमतर अनुभव पड़ता है। किंतु हिंदी तथा नेपाली कहानियों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न को शिवमूर्ति तथा सानु लामा ने जिस गंभीरता से उठाया है, वह अत्यंत साहसिक एवं प्रशंसनीय कार्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. सिंह, अरुण (संपा.), इंडिया सनसाइड, पृष्ठ-84, साहित्य वार्षिकी 2016, लखनऊ।

2. त्रिपाठी, कल्पना (संपा.), सानु लामाका साना कथाहरु, पृष्ठ-14, कल्पना प्रकाशन, दार्जिलिंग, संस्करण-2008

3. शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी, पृष्ठ-9, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2015

4. वही, पृष्ठ-80

5. लामा, सानु, सूर्यको तेस्रो किरण, पृष्ठ-33, जनपक्ष प्रकाशन, गंगटोक, संस्करण-2008

6. लामा, सानु, कथा सम्पद्, पृष्ठ-73, के. आर. इन्टर्प्राइजेस, गंगटोक, संस्करण-1995

7. नवले, संजय, वंचितों के प्रवक्ता : शिवमूर्ति, पृष्ठ-137, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण-2019

8. शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी, पृष्ठ-119, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2015